

---

# Nagaih Krita Kedareshamaheshvara Stuti

---

नागैः कृता केदारेशमडेश्वरस्तुतिः

---

## Document Information

---

Text title : Nagaih Krita Kedareshamaheshvara Stuti

File name : nAgaiHKRRitAkedAreshamaheshvarastutiH.itx

Category : shiva, shivarahasya, stuti

Location : doc\_shiva

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | bhImAkhyah aShTamAMshah | adhyAyaH 26

shivaprasAdaH | 4-15||

Latest update : July 4, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

July 5, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Nagaih Krita Kedareshamaheshvara Stuti

---

नागैः कृता केदारेशमधेश्वरस्तुतिः

---



(शिवरडस्थान्तर्गते भीमाप्ये)

नागा उच्युः ।

पाण्ड्यञ्जमित्रनयनामलभूतिगात्र

रुद्र त्रिणेत्र गिरिराजसुताकलत्र ।

पात्रं विचित्रतरमेतदलो पवित्र-

सत्रातिरात्रमभतर्पित लोक्याशु ॥ ४ ॥

श्रीव्योमकेश सकलेश मधेश शम्भो

कोशावकाश शशिशेभर शङ्करेश ।

देवेश भाण्डपरशो पशुपाशनाश

पाडीश मामकधिया तव पादभक्तान् ॥ ५ ॥

तं भर्गसर्गकराण्यय दीनवर्गं

सन्तार्यार्गलपदान्परिमोचयाशु ।

दूर्वादलार्चितपद त्रिदशारिगर्व-

निर्वापणार्णववसाम्भुजनेत्रपूज्य ॥ ६ ॥

श्रीमन्नेरुशरासन त्रिभुवनाध्यक्षाध्यराध्यक्ष नो

वीक्षस्वाद्य दयाकटाक्षलडरीसंछारितापाटिकान् ।

उक्षाधीश्वरकेतनेश्वर दयापात्र त्रिणेत्राधुना

कक्षाणां य पते सुदक्षमभङ्गत् तूर्णं प्रसादं कुरु ॥ ७ ॥

भूभद्राजकुमारिकाकुचतटीपाटीरपङ्काङ्कितं

रुद्राक्षप्रिय भस्मयुक्त निटिलज्वालोरु गङ्गाधर ।

वैयाघ्रत्वगलङ्कृताङ्गमसकृत्पश्येम सिते सदा

विश्वेशादिपदप्रदं हरिशरं सम्भावयामो हर ॥ ८ ॥

--

स्कन्द उवाच ।

नागानां य स्तवं श्रुत्वा केदारेशो मलेश्वरः ।  
तल्लिङ्गमध्याय्य तदा ऽप्यविरासीत्स्वयं उरः ॥ ८ ॥

नागाञ्जिनोत्तरासङ्गः शशाङ्कुतशेखरः ।  
उभया सलितो देवो नीलकण्ठस्त्रिलोचनः ॥ १० ॥

गङ्गाधरः कपालाङ्कुशूलज्वलनसत्करः ।  
तं दृष्ट्वा देवदेवेशं सर्पाः कद्रूसमन्विताः ॥ ११ ॥

प्रणाम्य य मलादेवं संस्तुवन्नीललोहितम् ॥ १२ ॥

--

नागाः उच्युः  
वेद्यर्ष शर्व यमगर्वलराव शर्व-  
कन्दर्पदर्पलर सर्पमलोरुडार ।  
अञ्चयन्न भीम भव भर्ग सुसर्गवर्ग-  
स्वर्गापवर्गद विभो तव भक्तिमार्गम् ॥ १३ ॥

दूर्वादलार्यनकृतां भवदीयलिङ्गे  
सङ्गेऽपि शाङ्गनिवलाः किमुतापमार्गैः ।  
भिल्वैश्च पङ्कजवरैः कनकैः कदम्बैः  
पूजयेन्मृत्युड कुलभूधरवास शम्भो ॥ १४ ॥

विश्राधिकेश्वर मलेश्वर रामधीर  
गौरीमनोडर उरात्यय मारमार ।  
संसारभारपरिडारभव प्रसीद  
श्रीशङ्कराव वरधुर्यधर प्रसीद ॥ १५ ॥

॥ एति शिवरडस्थान्तर्गते नागैः कृता केदारेशमलेश्वरस्तुतिः सम्पूर्णा ॥

- ॥ श्रीशिवरडस्थम् । भीमाप्यः अष्टमांशः । अध्यायः २६ शिवप्रसादः । ४-१५ ॥


- .. shrIshivarahasyam . bhImAkhyaH aShTamAMshaH . adhyAyaH 26 shivaprasAdaH .  
4-15..


Notes:

Skanda स्कन्द narrates the scene where Nāga-s नागः pray to Śiva शिव, while He makes an appearance to them and their mother Kadrū कद्रू.

Proofread by Ruma Dewan

---

——  
*Nagaih Krita Kedareshamaheshvara Stuti*  
pdf was typeset on July 5, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

